IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंजाब राज्य मे स्त्रीयों द्वारा गाये जानेवाले लोकगीत

– प्रा.डॉ. शिवदास विठ्ठलराव शिंदे

सहाय्यक प्राध्यापक (संगीत विभाग प्रमुख

यशवंत महाविद्यालय, नांदेड

लोकगीत, प्रेम और यूध्द के नृत्य मेले और त्योहार, नृत्य, संगीत तथा साहित्य पंजाब इस राज्य के सांस्कृतिक जीवन की विशे"ताएँ है । पंजाबी साहित्य की उत्पत्ती को तेरावी 'ताब्दी के मूसलमान सूफी संत 'ोखरफीद के रहस्यवादी और धार्मिक दोहों तथा सिख्ख पंथ के संस्थापक पंदरहवी और सोलावी 'ताब्दी के गूरू नानक से जोडा जा सकता है । जिन्होने पहली बार काव्य अभिव्यक्ती के माध्यम के रूप में व्यापक रूप से पंजाबी भा"ा का उपयोग किया । आठरहवी 'ताब्दी के उत्तरार्धमे पंजाबी साहित्य को समृध्द बनाने मे वारीस 'ाह की भूमिका अतुलनीय है । बीसवी 'ताब्दी के आरंभ मे कवी व लेखक भाई वीरसिंह तथा कवी पुरणसिंह और धनी राम चैत्रिक के लेखन के साथही पंजाबी साहित्यने आधूनिक काल मे प्रवेश किया । हाल के व"ोंमे पंजाबी संस्कृती के विभिन्न पहलू ओंका चित्रित करनेवाली विभिन्न लेखकों कवियों और उपन्यासकारों की भूमिका भी काफी महत्वपुर्ण है । पंजाब मे कई धार्मिक और मौसमी त्योहार जैसे दशहरा, दीपावली, बैसाखी और विभिन्न गुरूओं तथा संतो की व"ार्गांठ मनाए जाते है । भांगडा झूमर और सम्मी यहॉ के लोकप्रिय नृत्य है । पंजाब की स्थानीय नृत्य 'ौली गिद्या, महीलाओंकी विनोदपूर्ण गीत नृत्य 'ौली है । सीक्खों के धार्मिक संगीत के साथ – साथ उप 'ास्त्रीय मुगल 'ौली भी लोकप्रिय है जैसे ख्याल, ठुमरी, गजल और कव्वाली आदी 'ौली है । [1]

गीत मनू"य की जिंदगी में एक प्रेरणा श्रोत माने जाते है, जिस द्वारा मनू"य अपने मन के भावों को आसानी से व्यक्त कर सकता है । प्राकृती के असली बालों कों लोकगीतों का नाम दिया जाता है । मनू"य प्रकृति की सुदंरता को प्रेरित करते हूए नीले – नीले अम्बरों, वनो और उसकी हरीयाली व"ार्ा बादलों पक्षियों को व्यक्त करता हुआ यह कहता है कि अगर मनू"य प्राकृती में घूल – मिल जाए तो वह अपने मन की भावनाओं को व्यक्त करेगा वह एक लोकगीत बनजाता है । अगर हम पंजाब के लोकगीतोंकी बात करे तो पंजाब के लोकगीतो का सबसे ज्यादा योगदान पंजाब की महिला ओंका माना जाता है । पंजाब के इतिहास

के बारे मे अगर हम चर्चा करे तो यह कहने में कोई ‘ंका नही होगी कि पंजाब के लोकगीतों की जननी स्त्री को माना जाता है ।

सदियों से लेकर जो लोकगीत आज भी सुनने को मिलते है तो उसका सेहरा पंजाब की स्त्री पंजाबन के सिर पर आता है क्योंकी अगर हम लोकगीतों की गिनती भी करे तो सबसे ज्यादा पंजाबन के लोकगीतां जैसे जन्म से लेकर मृत्यु तक गाये जानेवाले लोक गीतों जैसे मे वह अपनी भूमिका निभाती है । अगर हम स्त्री लोक गीतों की बात करे तो उसके गीतों की भूमिका काविक और कल्यात्मिक जैसी प्रतीत होती है । पंजाबन के सत्कार के लिय कुछ ‘ाब्द अर्पण करने जरूरी हो जाते है । लोक गीतों मे पंजाबन की भूमिका मे कुछ ऐसा स्थान प्राप्त किया है की जो पंजाबन के दुसरे नाम द्वारा जैसे गीतोंकी रानी कहा जाता है । अगर हम पंजाब के स्त्री लोकगीतों की बात करे तो यह बताना बड़ा ही आसान हो जाता है की पंजाबन कौन है और उसका जन्म किस धरती पर हुआ पंजाबी लडकीयों के बारे में कहा जाता है की, पंजाबी स्वभाव वाली लडकीयों हमेशा परिवार के साथ घुल मिलकर रहती है । [2]

स्त्रीयों के लोकगीत :

घोडियॉ :–

विवाह से कुछ दिन पहले घर मे औरते अपने कुछ रिश्तेदारों, मुहल्ले की लडकीयोका इकट्ठा करके गीत गाती है । उसको घोडियॉ के लोक गीत कहते है । यह सिर्फ लडकों की ‘ाादी मे ही गाये जाते है ।

जैसे

निक्की निक्की बूंदी, वे निकेया मेंह वे वारे
मां वे सुहागन तेरे ‘ागून करे ।
दामा दी बोरी तेरा बाबा किराया
हाथिया दे संगम तेरा बाप किराया ।
नीली वे गोरी तेरा निकला चारे
भे ए सुहागन तेरी वाग किराया । [3]

सिठाणियॉ :

पंजाबी लोक गीतोंमे सिठणियॉ का मजा भरपूर रूप मे मिलता है जिसमे मनृ”य के स्वभाव, ‘ाारिरीक कमजोरी को पेश किया जाता है । सिठणी ‘ाब्द की उत्पत्ती सिट्ठा ‘ाब्द से हुई है जिसका ‘ाब्द ‘ार्मसार कर देना होता है । पंजाब मे यह विवाह के अवसर पर किया जाता है ।

जसे

वे तूं खड़ा ऐ खड़ोता, तेरा लक्क थक जू
नाल भैण नूं खड़ा ले वे सहारा लग जू । [4]

सुहाग पंजाबी लोकगीत :

महिलाओं द्वारा विवाह के दिन लड़की के घर मे गाये जानेवाले लोक गीतों को सुहाग कहा जाता है । इन लोकगीतोंमे दुल्हन की 'ाादी की मनोदशा, 'ाादी की इच्छा, एक सुंदर दुल्हे की लालसा और एक अच्छा घर एक परिपक्व और ससूराल के साथ एक एकांगी विवाह की कल्पना अपने माता पिता को छोडने की लालसा 'ाामिल है । और सांस्कृतिक प्रभावों के तहत बुने हुए सपने प्रकट होते है । सुहाग लडकिया और महिला ऍ एक साथ गाती है । इनमे गायक की आवश्यकता के अनूसार बदलता रहता है । सुहाग अर्थ और संरचनामें सरल है । उनके पास देहराव, प्राकृतिक स्पर्श, लय और प्रवाह है । [5]

जैसे

वध फुली वण वेल, सदा वण फुलिये
फुलो नागर वेल ।

मेहंदी लगाना :–

मेहंदी के पत्तों को पीसकर पानी में घोलकर हाथों और पैरों पर लगाने की रस्म को मेहंदी लगाना कहते है । मेहंदी लगाना एक आच्छा 'ागन और शिंगार का प्रतिक माना जाता है । प्राचीन समयमे लडके को भी मेहंदी लगाने का रिवाज था । कई जगहोंपर यह आज भी प्रचलित है । विवाह से एक दिन पहल रात को मेहंदी की रसम की जाती है । और साथ मेहंदी के लोक गीत गाये जाते है ।

जैसे

आओ नी संग सहेलियों मेरे वीर दे मेहंदी लाओ ।

सुरमा डालना :–

दुल्हे को सुरमा डालकर सजाने का काम उसकी भाभी को सौपां जाता है । पश्चिमी पंजाब मे भाभी सुरमा उस समय डालती है । जब दुल्हा – दुल्हन को लाने के लिय बिल्कुल तैयार हो जाता है । इस रस्म को निभाते हुय भाभी यह लोकगीत पेश करती है ।

जैसे

पहली सगाई वे दिवस रसभरी दुजी सलाई तारतिजीं
सलाई तां पावा जे मुहरा देवे वे देवरा मेरिया वे चार ।

खारे बिठाना :–

विवाह वालेदिन लडकी को सूबह नहला कर तैयार किया जाता है । उसको खारे बिठाने की रस्म कहा जाता है । उस समय के लोकगीत इस प्रकार के थे ।

जैसे

कहंदी पौतड़ी नहावे वे किस डोलिया पानी,
बेबे दी पौतड़ी नहावे उस डोलिया पानी ।

पंजाब के लोकगीतों को महसूस करते हूय हम यह कह सकते है की, लोकगीतोंकी जननी स्त्री को ही माना जाता है क्योंकी लोक गीतों में स्त्री ही अपने लोकगीतो की एक गायिका के रूप मे भो है और नायिका के रूप मे भी है ।

संदर्भ सूची :–

1- bhartidiscovery.org
2- m.nari.punjabkesari.in
3- punjabi songs. blogspot.com
4- printing Area. January 2016
5- punjabi - kavita.com